ओबमाओं की अगवानी

यह गर्व की नहीं शर्म की बात है

भारत का गणतंत्र दिवस साम्राज्यवादी देशों के साथ एकजुटता का प्रतीक बनता जा रहा है। गत वर्ष दुनिया के सबसे ताकतवर साम्राज्यवादी देश संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि थे। इस वर्ष 2016 में दुनिया की एक और बड़ी आक्रामक साम्राज्यवादी शक्ति फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांसुआ ओलांद मुख्य अतिथि होंगे।

भारत के शासक ऐसा क्यों कर रहे हैं? वे क्यों नही गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथि के बतौर भारत की तरह, अतीत में उपनिवेश रहे किसी देश के राष्ट्रपति को मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाकर साम्राज्यवाद के खिलाफ़ एकजुटता प्रदर्शित करते हैं।

फ्रांस में अभी पिछले दिनों एक आतंकवादी हमले में सौ से अधिक लोग मारे गये। इस हमले की जिम्मेदारी आतंकवादी संगठन आईएसआईएस ने ली। फ्रांस ने इस हमले के बाद आईएसआईएस के अड्डों पर भारी बमबारी की। 'इस्लामिक आतंकवाद' की इस घटना के बाद खूब जोर-शोर से चर्चा होने लगी और जी-20 की बैठक में यह मुद्दा छाया रहा है। भारत के प्रधानमंत्री ने भी 'इस्लामिक आतंकवाद' के इस विश्वव्यापी तेवर के साथ अपने भी तेवर दिखाये। फ्रांस में हुए इस आतंकवादी हमले की वजह क्या है? क्यों वहां आये दिन ऐसी घटनाएं घट रही हैं?

फ्रांस के शासक अमेरिकी शासकों की तरह एशिया और अफ्रीका महाद्वीप के कई देशों में सैन्य अभियान चला रहे हैं। फ्रांस में दक्षिणपंथी, वामपंथी किसी की सरकार हो, वह इन सैन्य अभियानों को नये-नये नाम से, नयी-नयी वजह बताकर अंजाम देती है। लीबिया, सीरिया, माली, मध्य अफ्रीकी गणराज्य आदि कई देशों में फ्रांस ने सैन्य हस्तक्षेप किये हैं। वे यह सब अमेरिकी व अन्य यूरोपीय साम्राज्यवादियों के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग से अंजाम देते रहे हैं।

फ्रांसीसी साम्राज्यवाद के ये हमले इन देशों को व्यापक तौर पर नुकसान पहुंचाते हैं। भरपूर प्राकृतिक संसाधन और भू-राजनैतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण इन देशों में फ्रांसीसी साम्राज्यवादी पूरी कवायद करते हैं कि उनके हितों के अनुरूप काम करने वाली सरकारें कायम हों। ऐसे में इन देशों में व्यापक प्रतिक्रिया होती रही है।

कट्टर इस्लामिक आतंकवादी समूहों को

भी अक्सर पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने अपने घृणित हितों को साधने के लिये पैदा किया। अलकायदा, तालिबान, हमास, आईएसआईएस ऐसे संगठन रहे हैं जिन्हें साम्राज्यवादियों व क्षेत्रीय प्रतिक्रियावादी ताकतों ने पहले पैदा किया फ़िर इनसे एक हद तक अपने हित सध जाने के बाद इन्हें ही अपने निशाने पर ले लिया। कालान्तर में हुआ भी यह कि ये संगठन अपने पैदा करने वालों के इशारों पर चलने के स्थान पर उनके ही खिलाफ़ हो गये। अपने ही जन्मदाताओं से इन्होंने बगावत कर ली। ऐसी स्थिति में इन साम्राज्यवादी ताकतों को फ़िर से इन देशों में इनके दमन के नाम पर हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया। इराक, अफ़गानिस्तान, सोमालिया, सीरिया, यमन, माली, कांगो आदि ऐसे कई देश हैं जहां दशकों से यही हो रहा है। फिलीस्तीन में इजरायल का हस्तक्षेप भी ऐसा ही है।

फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों ने अपनी नीतियों के जरिये देश के भीतर और बाहर ऐसे हालात पैदा किये हैं जिसके कारण वहां ऐसे आतंकवादी हमलों की ज़मीन उर्वर है। हाल के दशकों में वहां असहिष्णुता में भारी वृद्धि हुयी है। धार्मिक अल्पसंख्यकों और अप्रवासियों पर हमले बढ़े हैं। संकटग्रस्त फ्रांसीसी समाज में वर्ग संघर्ष को कुंद करने के लिये फ्रांसीसी शासकों ने अंधराष्ट्रवादी भावनाओं को भड़काया है। इस मामले में निकोलस सरकोजी से लेकर फ्रांसुआ ओलांद एक ही राह के राही रहे हैं। भले ही एक दक्षिणपंथी हो और दूसरा तथाकथित रूप से वामपंथी।

फ्रांस का हथियार उद्योग इन सब नीतियों से फलता-फूलता रहा है। भारत के शासक फ्रांस के हथियारों के एक बड़े खरीददार हैं। हाल में ही राफेल नाम के अति आधुनिक लड़ाकू विमान की खरीददारी में भारत के शासकों ने अरबों रुपये खर्च किये हैं। भारत के शासक ऐसे हथियारों के दम पर अपनी सैन्य क्षमता को निरंतर बढ़ाते जा रहे हैं। वर्ष दर वर्ष भारत का रक्षा बजट तीव्र गति से बढ़ रहा है। इसका एक बड़ा हिस्सा साम्राज्यवादी देशों अमेरिका, फ्रांस, रूस से हथियार खरीदने में खर्च होता है।

फ्रांस के राष्ट्रपति को भारत के गणतंत्र दिवस का मुख्य अतिथि बनाया जाना राफ़ेल जैसे कई सौदों की ज़मीन तैयार करना है। ऐसे हथियारों की खरीददारी भारत की सरकार भारतीय जनता के हितों को दरकिनार कर उसके खून-पसीने को निचोड़कर ही सम्भव बनाती है। फ्रांस जैसे देशों के शासक इन सौदों के जरिये अपने हथियार तथा अन्य उद्योगों की बिक्री बढ़ाने को सम्भव बनाते हैं। एशिया, अफ्रीका, महाद्वीप में इनके द्वारा किये जाने वाले हमले इन हथियारों की नुमाइश मैदान में तब्दील हो जाते हैं। भारत की जनता लुटती है और दूसरे देशों की जनता इनके घातक हमलों में अपने जान-माल से हाथ धोती है।

भारत का गणतंत्र दिवस भारत की जनता के लिये गौरव का दिन होना चाहिये था परन्तु वह हथियारों की भौंडी प्रदर्शनी का दिन बन जाता है। भारत के शासक देश-दुनिया को दिखाते हैं कि हमारे पास कौन-कौन से हथियार हैं। हमारी सैन्य क्षमता क्या है।

भारत के शासकों ने बहुत पहले ही खुद को इन संघर्षों से अलग कर लिया जो विश्व साम्राज्यवाद के खिलाफ़ लक्षित थे। अब तो वे स्वयं एक साम्राज्यवादी देश बनने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। शासक वर्ग वह सब हासिल करना चाहता है जो विश्व के प्रमुख साम्राज्यवादी देशों को हासिल है। वह सुरक्षा परिषद का वीटो पावर वाला स्थायी सदस्य बनना चाहता है। वह चाहता है कि पूरी दुनिया में उनकी तूती बोले।

भारत के शासकों की जब ऐसी मंशा हो तो वह क्यों स.रा. अमेरिका, फ्रांस अथवा रूस के खिलाफ़ बोलेंगे। क्यों साम्राज्यवाद से सताये हुए देशों के साथ खड़े होंगे। क्यों गणतंत्र दिवस के दिन भारत की ज़मीन पर साम्राज्यवाद विरोध के नारों को बुलंद करेंगे।

भारत के शासक भारत के भीतर हर उस आवाज़ को कत्ल करने को तैयार हैं जो मुक्ति के स्वर लिये होती है। भारत का अपने पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध एक ऐसे बड़े भाई का है जिसकी बात छोटों को माननी है। भारत के गणतंत्र दिवस के दिन सैन्य क्षमता का प्रदर्शन दूसरे देशों के गणतंत्र पर दबाव बनाने का है। ऐसे में ओबामा, ओलांद आदि का मुख्य अतिथि बनाये जाना अपनी हैसियत, क्षमता, रौब को बढाने का जरिया बन जाता है।

फ्रांस के आज के शासकों के हाथ खून से सने हुए हैं। वे 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति के वारिस नहीं हैं। वे तो 'आज़ादी', 'बराबरी', 'भाईचारे' के कातिल हैं। वे तो उन हत्यारों के वारिस हैं जिन्होंने 1871 में पेरिस कम्यून के बहादुर मज़दूरों का बेरहमी से कत्ल किया था। पेरिस कम्यून को रक्त के समुद्र में डुबोने वाले फ्रांस का पूंजीपति वर्ग का पूरा इतिहास अपने उपनिलवेशों में ऐसे ही कारनामों से भरा पड़ा है। उन्होंने अफ्रीका एशिया के अपने उपनिवेशों में वहां की जनता का क्रूरतापूर्वक दमन किया। बेरहमी से प्राकृतिक साधनों की लूट मचायी। फ्रांसीसी साम्राज्यवादी आज भी यही सब कुछ कर रही हैं।

फ्रांसीसी क्रांति, पेरिस कम्यून से प्रेरणा लेने वाले भारत के वर्ग सचेत मज़दूर जानते हैं कि फ्रांस के राष्ट्रपति का भारत के पूंजीवादी गणतंत्र का मुख्य अतिथि बनना भारत के शासकों के लिये भले ही गर्व की बात हो परन्तु उनके लिये भारत की ज़मीन पर होना शर्म की बात है।

-नागरिक

अपने चुनावी वायदों से पलटी सीमा त्रिखा

फ़रीदाबाद (म.मो.) बड़खल विधानसभा क्षेत्र की जनता से चुनावों में विधायिका सीमा त्रिखा द्वारा किए गए सुखे आश्वासनों, व वायदों के पूरे न होने के कारण क्षेत्रवासी अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। जो कि चुनावों के दौरान सीमा त्रिखा ने क्षेत्रवासियों से किए थे। विधायिका ने चुनावों के दौरान जनता से वायदा किया था कि उनके क्षेत्र में सबसे पहले वो ब्याजखोरों, सट्टेबाज़ों जुआरियों, शराब तश्करों पर लगाम कसेगी। अब उनके घर 21 डी के निकट बसी गांधी कॉलोनी में ही एक दर्जन से अधिक अवैध शराब तस्कर व सट्टेबाज़ खुल कर दिन-दहाड़े अपने गोरखधंधों को अजांम दे रहे हैं। जबकि इसी कॉलोनी की सड़क से रोज़ाना विधायिका महोदय अपने दिनचर्या के कामों से आती-जाती हैं। उस कॉलोनी की सड़क की हालत इतनी बद्तर है कि रोज़ाना दो-चार बाइक सवार दुर्घटना ग्रस्त होते हैं। वहां पर्याप्त लाईट की भी व्यवस्था नहीं है। रात को वहां से निकलना तो राम भरोसे है।

3 नं. डीएवी कॉलेज के ठीक सामने दिन-दहाड़े अवैध शराब माफ़िया अपने धंधे कर रहे हैं। 3 नम्बर में ही बसी राहुल कॉलोनी में दो दर्जन से अधिक घरों में शराब तस्करी, सट्टे की पर्चियां बिक रही है। एनएच 5 के एल ब्लॉक, फ्रूटगार्डन,में जमकर देह व्यापार का धंधा फल-फूल रहा है।

विधायिका के गृहक्षेत्र में अफ़ीम चरस, खुल कर बेची जा रही है। एनएच 5 डी ब्लॉक, सी ब्लॉक, एन ब्लॉक में पाला सरदार, सोनू-मोनू, 5 के ब्लॉक में आशीष खत्री नोनी, भगत सिंह कॉलोनी में पाला सरदार बीच सड़क पर शराब तस्करी व सट्टे की पर्चियां बेच रहा है। एनएच 5 व 3 नम्बर में आधा दर्जन से अधिक घरों में वेश्यावृत्ति के अड्डे चल रहे हैं। स्कूली बच्चे इन गोरखधंधों करने वालों के शिकार बन रहे हैं। जब कोई स्कूली बच्चा इनका शिकार होता है तो ऐसे ही विधायक यदि इनके चौथे-उठालो, पर लफ़्फ़ेबाजी कर चलते बनते हैं। शहर में हर दूसरी गली-मोहल्ले में विल्डरों द्वारा अवैध निर्माण, शॉपिंग काम्पलैक्स बनाए जा रहे है। एन एच 5 शिव मंदिर रोड पर स्थित मित्तल काम्पलैस में 1 दर्जन से अधिक ब्याजखोरों ने आतंक मचा रखा है। इनमें से आधे व्याजखोरों ने तो अपने होर्डिंग में विधायक महोदया के फ़ोटो तक लगवा रखे हैं। बड़खल झील पर झूठी लफ़्फ़ाजी करने वाली विधायक महोदया शायद भूल गई कि इन्होंने जो आरोप पूर्व विधायक पर लगा कर वोट बटोरे थे वही आरोप उन पर सिद्ध होते साफ़ नज़र आ रहे हैं। शहर की कानून व्यवस्था का दिवाला निकला पड़ा है और दूसरी तरफ़ मुख्यमंत्री खट्टर फ़रीदाबाद को स्मार्ट सिटी कहते हैं।

गतांक की चीर-फ़ाड़

मज़दूर मोर्चा का 16-31 दिसम्बर 2015 का अंक पढने को मिला जिसमें राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय समसामयिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण लेख पढने को मिले। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चहेते प्रख्यात अभिनेता सलमानखान के 13 वर्ष पुराने मामले में मई 2015 में सैशन जज देशपांडे द्वारा 5 वर्ष की सज़ा सुनाने, उसी दिन बम्बई उच्च न्यायालय द्वारा अन्तरिम जमानत देने और अब बम्बई उच्च न्यायालय के जज ए आर जोशी द्वारा बरी कर देने से भारतीय न्याय व्यवस्था की तथाकथित स्वतंत्रता व निश्पक्षता पर सवालिया निशान लग गया है जिसका पूरा विश्लेषण लेख 'याद दिलाने का शुक्रिया बॉम्बे हाई कोर्ट-जिसकी लाठी उसकी भैंस, जस्टिस जोशी ने दी रिहाई: तोहमत मोदी पर आई' में किया गया है। यदि एतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो न्याय व्यवस्था की पूरी असलियत उज़ागर हो जाती है।

भारत में अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक साम्राज्य व अपने हमदर्दों तथा शुभ चिंतकों की जान माल ही हितों की सुरक्षा के लिये प्रशासन व्यवस्था, न्याय-प्रणाली व कानून के शासन की स्थापना की थी। स्वतंत्रता के बाद अब शासक वर्ग, सभ्रांत व दबंग लोगों की हितों की रक्षा इस व्यवस्था द्वारा की जाती है। ये लोग कानून के दाव-पेंच के सहारे तथा न्यायविदों को प्रभावित करके अपना हित साध लेते हैं, जबकि आम आदमी तो वकीलों की भारी फ़ीस चुकाने में असमर्थ रहता है और यदि कोई साहस करके अदालत में पहूंच जाता है तो वह सैशन अदालत, उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय और वकीलों के चक्कर में फ़सा रहता है। इसके विपरीत सलमान खान व अमित शाह जैसे लोग अदालतों से तथाकथित सबूतों के अभाव में बरी हो जाते हैं।

शासक द्वारा सेवानिवृत्ति के बाद न्यायधीशों को आकर्षक पदों पर नियुक्ति का प्रलोभन देकर अपने पक्ष में निर्णय करवा लिये जाते हैं। जस्टिस जोशी के इस निर्णय ने 10 वर्ष पूर्व एक वकील की सलाह को सत्य साबित कर दिया है। मेरे एक रिश्तेदार की कार का मोटर बाईक से आमने-सामने टक्कर हो गई थी। मोटर बाईक की स्पीड इतनी तेज थी कि मोटर बाईक कार के बोनेट पर चढ कर विंड स्क्रीन के शीशे को तोड़कर कार की छत पर चढ गई जहां से दोनों नवयुवक नीचे गिर गए और उनकी मौत हो गई। उन युवकों के पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था।

अदालत में मुकदमा चला। अदालत से बाहर समझौते की बात चली तो पंजाब हरियाणा उच्च न्यायालय के एक वकील ने सलाह दी कि यदि अदालत से बाहर समझौता होता है तो कर लो क्योंकि अदालत में ताकतवर बड़े लोगों को सज़ा होती नहीं और जज महोदय को मोटर दुर्घटना मामलों में सज़ा तो सुनानी होती है। इसलिए ऐसे मुकदमों में आम लोगों को सज़ा सुनाकर जज अपने आंकड़े पूरे कर लेते हैं। सलमान खान की तरह दिल्ली में प्रतिष्ठित उद्योगपति नंदा के पौत्र का भी मोटर दुर्घटना का मामला हुआ था जिसमें अनेक लोग मारे गए थे, परंतु नंदा का कुछ नहीं बिगड़ा। स्पष्ट है कि वर्तमान न्याय-व्यवस्था ताकतवर लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। ऐसी न्याय व्यवस्था से लोग़ों का विश्वास उठता जा रहा है।

स्तम्भ 'खबर दार एक मुकदमा संसद में' के जरिए भाजपा नेता सुब्रह्मण्य स्वामी द्वारा नेशनल हेराल्ड अखबार की सम्पत्ति को हड़पने के मामले में दायर मुकदमे में दिल्ली की एक अदालत द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी व उपाध्यक्ष राहुल गांधी को समन भेजने पर संसद की कार्यवाही ठप्प करने व सड़कों पर प्रदर्शन करने पर उचित कटाक्ष किया गया है। कांग्रेस द्वारा राजनीतिक विद्वेश का आरोप भी लगाया जा रहा कि स्वामी भाजपा नेता है जिसका मुख्य ध्येय कांग्रेस व गांधी परिवार का विरोध करना है, उसे जेड श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की गई है तथा लुटियन ज़ोन में सरकारी बंगला भी दिया जा रहा है। परंतु इन आरोपों से सोनिया गांधी व राहुल गांधी निर्दोष तो नहीं हो जाते। नेशनल हेराल्ड मामले में महाराष्ट्र में भी जांच की बात की जा रही है।

पूंजीवादी व नवउदारवादी युग में मज़दूरों की दशा बदतर होती जा रही है और मोदी सरकार उद्योगपतियों को खुश करने के लिये तथाकथित श्रमसुधार के नाम पर मज़दूरों को कारखानों के मालिकों के रहमों करम पर छोड़ने जा रही है। मज़दूरों के हितों की रक्षा के लिये बनी ट्रेड यूनियनें भी अब नाममात्र का ही संघर्ष करती हैं जिसका लेख 'उज़ागर होता दलाल ट्रेड यूनियनों का चरित्र' में विवेचन किया गया है।

बिहार विधानसभा चुनाव में भाजपा की करारी हार होने के बाद भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा पराजय का सामुहिक उत्तरदायित्व लेने के सवाल पर भाजपा के मार्गदर्शक मंडल (निर्वासित बूढों) द्वारा दिए गए बयान के मद्देनजर लेख 'किस्सा चार निर्वासित दरवेशों का' में आडवाणी, जोशी, सिन्हा व शान्ताकुमार (चार दरवेश) तथा मोदी व अमितशाह (रंगा बिल्ला) अत्यंत उपयुक्त है। भाजपा सांसद कीर्ति आज़ाद द्वारा डीडीसीए में व्याप्त भ्रष्टाचार का मुद्दा उछालने पर भाजपा द्वारा आज़ाद को निलम्बित किए जाने पर मार्ग दर्शक मंडल में आज़ाद के मुद्दे पर अपनी बैठक की है। ऐसा लगता है कि ये चारों निर्वासित व्यक्ति भाजपा में अपनी अहमियत का फ़िर अहसास कराना चाहते हैं।

जापानी प्रधानमंत्री से अहमदाबाद व मुम्बई के बीच बुलेट ट्रेन चलाने के समझौते को भाजपा द्वारा राष्ट्रीय गर्व व मोदी की महान सफलता के रूप में पेश किया जा रहा है, परन्तु आम आदमी की यात्रा करने के लिए उपलब्ध रेलगाड़ी व साधारण बोगी की दयनीय स्थिति की ओर सरकार का कोई ध्यान नहीं है, जिसका लेख 'ठग रेल मंत्री और बुलेट प्रधानमंत्री-ये है ट्रेन की जनरल बोगी का हाल' द्वारा सही चित्रण किया गया है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव जीतने के लिये भाजपा ने जो वादे किए थे वे सत्ता प्राप्ति के बाद दर किनार कर दिए गए हैं। राज्य में प्रशासन पंगु होता जा रहा है, भ्रष्टाचार बढ रहा है, लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, साम्प्रदायिक उन्माद फ़ैलाया जा रहा है-स्पष्ट है राज्य में मुद्दों की भरमार है जिनको उठाना विपक्ष का काम है। परंतु विपक्ष इन मुद्दों को उठाने की बजाए आपस में फूट का शिकार हो रहा है जिसका उदाहरण है कांग्रेस में हुड्डा बनाम हुड्डा विरोधी गुट-कैप्टन अजय, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक तंवर आदि जिसका लेख 'कैप्टन अजय बनाम हुड्डा, झगड़ा सारा लूट का' में सटीक विश्लेषण किया गया है।

स्तम्भ 'तुर्की-ब-तुर्की' तथा 'व्यंग्य' ने मज़दूर मोर्चा अखबार के महत्व को और बढा दिया है। अन्य प्रकाशित लेख भी उच्च स्तरीय व प्रशंसनीय है।

-प्रो.जुगल किशोर गुप्ता